Volume 1, Issue 1, July-September 2026
e-ISSN: Awaiting

Journal of INDIAN KNOWLEDGE STUDIES (JIKS)

भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीति दर्शन: कौटिल्य, शुक्रनीति और शांतिपर्व के सिद्धांतों का आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष

(Political Philosophy in Indian Knowledge System: Contemporary Political Perspective of Kautilya, Shukraniti, and Shantiparv)

डॉ. ऋचा शुक्ला[1], डॉ. रश्मि गुप्ता[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग शांति देवी राजकीय महाविद्यालय, जेवर गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]सहायक आचार्या, रसायन विज्ञान विभाग, श्री द्रोणाचार्य (पी.जी.) कॉलिज, दनकौर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश।

शोध सार (ABSTRACT)

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) में राजनीति दर्शन का इतिहास अत्यंत समृद्ध, व्यावहारिक और बहुआयामी रहा है। पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन जहाँ राज्य को एक कृत्रिम समझौते या केवल शक्ति के केंद्र के रूप में देखता है, वहीं प्राचीन भारतीय मनीषा ने इसे 'राजधर्म' और 'दंडनीति' के माध्यम से लोक-कल्याण तथा धर्म (कर्तव्य) की स्थापना का माध्यम माना। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय राजनीति दर्शन के तीन मुख्य स्तंभों–कौटिल्य के अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, और महाभारत के शांतिपर्व–का एक तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य इन प्राचीन ग्रंथों में प्रतिपादित सिद्धांतों (जैसे सप्तांग सिद्धांत, मंडल सिद्धांत, योग्यता आधारित चयन, विकेंद्रीकरण, और लोक-कल्याणकारी राज्य) की आधुनिक वैश्विक राजनीति, सुशासन (Good Governance), कूटनीति (Diplomacy) और प्रशासनिक प्रबंधन में प्रासंगिकता को रेखांकित करना है। शोध पद्धति मुख्य रूप से ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक और पाठ्य-आधारित (Text-based) है। शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि यथार्थवाद (Realism) और नैतिकता (Ethics) का जो अद्भुत समन्वय भारतीय चिंतन में मिलता है, वह समकालीन वैश्विक भू-राजनीतिक अस्थिरता और प्रशासनिक संकटों का समाधान करने में पूरी तरह सक्षम है।

मुख्य शब्द (KEYWORDS)
भारतीय ज्ञान परंपरा, राजधर्म, दंडनीति, कौटिल्य, शुक्रनीति, शांतिपर्व, सुशासन, आधुनिक भू-राजनीति।

ARTICLE HISTORY
Received: 02 July 2026
Revised: 15 July 2026
Accepted: 04 August 2026
Published: 05 September 2026

CITATION
डॉ. ऋचा शुक्ला, (2026) भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीति दर्शन: कौटिल्य, शुक्रनीति और शांतिपर्व के सिद्धांतों का आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष. *Journal of Indian Knowledge Studies (J. Indian Knowl. Stud.)*, 1(1), 41-44. https://doi.org/

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

इक्कीसवीं सदी के राजनीतिक चिंतन पर मुख्य रूप से पाश्चात्य विचारकों जैसे थॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, निकोलो मैकियावेली और जेरेमी बेंथम का वर्चस्व रहा है। पाश्चात्य जगत ने राजनीति को केवल शक्ति संघर्ष (Power Struggle) और अधिकारों के इर्द-गिर्द केंद्रित रखा। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीति को 'राजधर्म' या 'दंडनीति' कहा गया, जिसका मूल उद्देश्य समाज में न्याय, व्यवस्था और प्रत्येक नागरिक के भौतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान (योगक्षेम) को सुनिश्चित करना था।

प्राचीन भारतीय विचारकों ने यह भली-भांति समझ लिया था कि बिना एक सुदृढ़ राजनीतिक व्यवस्था के समाज में 'मात्स्य न्याय' (जंगल राज या जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली स्थिति) उत्पन्न हो जाता है। इसी मात्स्य न्याय को समाप्त करने के लिए राज्य और राजा के कर्तव्यों का निर्धारण किया गया। भारतीय राजनीति दर्शन के वाङ्मय में कौटिल्य का अर्थशास्त्र व्यावहारिक राजनीति का चरम है, शुक्रनीति संस्थागत सांगठनिक प्रबंधन और श्रम कल्याण का अद्भुत दस्तावेज है, तथा महाभारत का शांतिपर्व राजनीति में नैतिकता, संकट प्रबंधन और लोक-कल्याण का शाश्वत स्रोत है। वर्तमान समय में जब वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र संकट में है, युद्ध की विभीषिका बढ़ रही है और लोक-कल्याण की भावना संकुचित हो रही है, इन प्राचीन सिद्धांतों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

2. कौटिल्य का अर्थशास्त्र: व्यावहारिक यथार्थवाद और आधुनिक शासन

कौटिल्य (चाणक्य) ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के एक महान रणनीतिकार, अर्थशास्त्री और प्रधानमंत्री थे। उनका ग्रंथ अर्थशास्त्र केवल अर्थशास्त्र की पुस्तक नहीं है, बल्कि यह शासन कला (Statecraft) और राजनीति का एक व्यापक विश्वकोश है। कौटिल्य को अक्सर 'भारतीय मैकियावेली' कहा जाता है, परंतु कौटिल्य का यथार्थवाद मैकियावेली से अधिक व्यापक है क्योंकि वे अंततः राज्य को धर्म और लोक-कल्याण के अधीन रखते हैं।

2.1 सप्तांग सिद्धांत और आधुनिक राज्य की संरचना

कौटिल्य ने राज्य को एक जीवित जीव (Organic Theory) के रूप में देखा और इसके सात अंग (Elements) निर्धारित किए:

1. स्वामी (राजा): राज्य का सिर। आधुनिक संदर्भ में यह देश का सर्वोच्च नेतृत्व (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति) है।
2. अमात्य (मंत्री/अधिकारी): राज्य की आँखें। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यह देश की नौकरशाही (Bureaucracy) और प्रशासनिक ढांचा है।
3. जनपद (भूमि और जनता): राज्य की जंघाएँ। यह किसी देश की भौगोलिक सीमा और उसकी जनसंख्या को दर्शाता है।
4. दुर्ग (किला): राज्य की बाहें। आधुनिक संदर्भ में यह राष्ट्रीय सुरक्षा ढांचा, सीमा सुरक्षा और सैन्य छावनियां हैं।
5. कोष (खजाना): राज्य का मुख। यह देश की अर्थव्यवस्था, राजस्व, केंद्रीय बैंक और वित्तीय स्थिरता का प्रतीक है।
6. दंड (सेना/बल): राज्य का मस्तिष्क। यह देश की रक्षा सेनाएं (थल, नभ, जल) और कानून व्यवस्था बनाए रखने वाली पुलिस शक्ति है।
7. मित्र (सहयोगी): राज्य के कान। आधुनिक राजनय में यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश के रणनीतिक और कूटनीतिक साझेदार मित्र राष्ट्र हैं।

आधुनिक राजनीति विज्ञान में राज्य के चार आवश्यक तत्व माने जाते हैं (भूभाग, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता)। कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत इससे कहीं अधिक व्यापक है क्योंकि यह राज्य के आंतरिक प्रबंधन (अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और कूटनीति) को भी समाहित करता है।

2.2 मंडल सिद्धांत और समकालीन भू-राजनीति (Geopolitics)

कौटिल्य का विदेश नीति संबंधी 'मंडल सिद्धांत' शक्ति-संतुलन (Balance of Power) पर आधारित है। 12 राज्यों के इस चक्र में कौटिल्य का मूल सूत्र है: "अरिः प्रकृत्यमित्रः" अर्थात् "पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से शत्रु होता है और शत्रु का शत्रु मित्र होता है।"

यह सिद्धांत आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति के 'यथार्थवादी सिद्धांत' (Realist Theory of International Relations) का आधार है। उदाहरण के लिए, समकालीन दक्षिण एशिया और वैश्विक राजनीति में भारत, चीन और अमेरिका के त्रिकोणीय संबंधों को कौटिल्य के मंडल सिद्धांत के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है। भारत और चीन की भौगोलिक सीमाएं मिलती हैं, अतः दोनों के बीच रणनीतिक प्रतिस्पर्धा (अरि) स्वाभाविक है, जबकि अमेरिका (जो चीन का प्रतिस्पर्धी है) भारत का रणनीतिक मित्र बनकर उभरता है।

2.3 षड्गुण्य नीति और कूटनीति

विदेशों से संबंध संचालन के लिए कौटिल्य ने छह प्रकार की गतियों (Six-fold Policy) का प्रतिपादन किया:

- संधि (Peace Treaty): शांति स्थापित करना।
- विग्रह (Hostility): युद्ध या शत्रुता की स्थिति।
- यान (Marching): युद्ध के लिए प्रस्थान या सैन्य दबाव।
- आसन (Neutrality): उदासीन या तटस्थ रहना (जैसे शीतयुद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति)।
- संश्य (Alliance): अपनी रक्षा के लिए किसी शक्तिशाली राज्य की शरण लेना।
- द्वैधीभाव (Double Game): एक राज्य से संधि और दूसरे से विग्रह की दोहरी नीति।

आज के राजनय में जिसे हम 'स्मार्ट पावर' (Smart Power) कहते हैं—जो सॉफ्ट पावर (सांस्कृतिक कूटनीति) और हार्ड पावर (सैन्य शक्ति) का मिश्रण है—वह कौटिल्य की षड्गुण्य नीति और 'साम, दाम, दंड, भेद' के उपायों का ही आधुनिक संस्करण है।

3. शुक्रनीति: प्रशासनिक प्रबंधन, योग्यता और संस्थागत ढांचा

'शुक्रनीतिसार' (महर्षि शुक्र द्वारा रचित) प्राचीन भारतीय राजनीति का एक ऐसा ग्रंथ है जो राज्य के व्यावहारिक और संस्थागत प्रबंधन पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है। शुक्रनीति का आधुनिक प्रशासनिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर कई चौंकाने वाले आधुनिक तत्व दिखाई देते हैं।

3.1 योग्यता-आधारित चयन (Meritocracy)

शुक्रनीति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह जन्म या जाति के आधार पर पदों के आवंटन का पुरजोर विरोध करती है। शुक्र स्पष्ट रूप से कहते हैं:

"न जात्या न कुलेनैव श्रेष्ठत्वं प्रतिपद्यते। शीलश्रुतगुणैरेव श्रेष्ठत्वं हि प्रकीर्तितम्॥"

(कोई भी व्यक्ति केवल जाति या कुल से श्रेष्ठ नहीं होता, बल्कि वह अपने शील, ज्ञान और गुणों से ही श्रेष्ठता प्राप्त करता है।)

यह सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक देशों के सिविल सेवा आयोगों (जैसे भारत में UPSC) और कॉर्पोरेट जगत के मानव संसाधन प्रबंधन (HR Management) का मूल आधार है, जहाँ केवल योग्यता (Merit) को ही चयन का पैमाना माना जाता है।

3.2 मंत्रिपरिषद और शक्तियों का विकेंद्रीकरण (Decentralization)

शुक्रनीति में राजा को निरंकुश होने से स्पष्ट रूप से रोका गया है। शुक्र का मानना था कि भले ही राजा सर्वगुण संपन्न हो, फिर भी उसे बिना मंत्रियों की सलाह के अकेले निर्णय नहीं लेना चाहिए, क्योंकि अकेले व्यक्ति की बुद्धि भ्रमित हो सकती है। उन्होंने 10 प्रमुख मंत्रियों (जैसे पुरोहित, प्रतिनिधि, प्रधान, सचिव, मंत्री, प्राड्विवाक यानी मुख्य न्यायाधीश, पंडित, सुमंत्र, अमात्य और दूत) के एक सुव्यवस्थित कैबिनेट ढांचे की वकालत की।

यह व्यवस्था आधुनिक संसदीय प्रणाली (Parliamentary System) और 'सामूहिक उत्तरदायित्व' (Collective Responsibility) के सिद्धांत के अत्यंत निकट है, जहाँ प्रधानमंत्री अपनी कैबिनेट के साथ मिलकर निर्णय लेता है।

3.3 श्रम कल्याण और औद्योगिक संबंध (Labor Laws)

शुक्रनीति में कर्मचारियों और श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए जो नियम दिए गए हैं, वे आधुनिक 'लेबर लॉ' (Labor Laws) के समान

हैं। शुक्र ने निम्नलिखित बातें निर्धारित की थीं:

- कार्य के घंटे: श्रमिकों की शारीरिक क्षमता के अनुसार काम के घंटे निश्चित होने चाहिए।
- उचित वेतन (Fair Wages): वेतन इतना अवश्य होना चाहिए जिससे कर्मचारी अपने परिवार का भरण-पोषण सम्मानपूर्वक कर सके।
- अवकाश (Leaves) और विश्राम: बीमारी की स्थिति में सवेतन अवकाश (Paid Leave) और उत्सवों के समय विश्राम मिलना चाहिए।
- पेंशन और भविष्य निधि (PF): दीर्घकाल तक सेवा करने वाले कर्मचारियों के लिए वृद्धावस्था में पेंशन तथा उनकी संचित राशि (प्रोविडेंट फंड की तरह) देने का प्रावधान था।

प्राचीन काल में इस प्रकार के कल्याणकारी नियमों का होना यह सिद्ध करता है कि भारतीय राजनीति दर्शन केवल शासक केंद्रित नहीं, बल्कि प्रजा और श्रमिक केंद्रित भी था।

4. महाभारत का शांतिपर्व: राजधर्म, लोक-कल्याण और संकट प्रबंधन

महाभारत का 'शांतिपर्व' भारतीय राजनीति दर्शन का आध्यात्मिक और नैतिक शिखर है। कुरुक्षेत्र के युद्ध की समाप्ति के बाद, शरशैया पर लेटे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को राजा के कर्तव्यों (राजधर्म) का जो उपदेश दिया, वह शाश्वत है।

4.1 लोक-कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा

शांतिपर्व के अनुसार, राजा या राज्य का अस्तित्व स्वतः के भोग के लिए नहीं है, बल्कि प्रजा के कल्याण के लिए है। भीष्म कहते हैं कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है और प्रजा के दुख में ही राजा का दुख है। राजा का मुख्य कर्तव्य अनाथों, वृद्धों, विधवाओं और असहायों की रक्षा करना है।

यह आधुनिक 'वेलफेयर स्टेट' (Welfare State) का मूल सिद्धांत है। आज के समय में सरकारें जो सामाजिक सुरक्षा योजनाएं चलाती हैं (जैसे मुफ्त राशन, वृद्धावस्था पेंशन, आयुष्मान भारत जैसी स्वास्थ्य योजनाएं), वे सभी शांतिपर्व के इसी राजधर्म के सिद्धांतों के अंतर्गत आती हैं।

4.2 न्यायसंगत कराधान का सिद्धांत (Principles of Taxation)

शांतिपर्व में टैक्स (कर) वसूलने की प्रक्रिया पर बहुत सुंदर और व्यावहारिक निर्देश दिए गए हैं। भीष्म युधिष्ठिर को समझाते हैं:

1. मालाकार (माली) बनाम अंगारिक (कोयला बनाने वाला): राजा को माली की तरह होना चाहिए जो बगीचे से फूल इस तरह चुनता है कि पौधे को नुकसान न पहुंचे और वह दोबारा फूल दे सके। राजा को कोयला बनाने वाले की तरह नहीं होना चाहिए जो पूरे पेड़ को ही जलाकर राख कर देता है।
2. भ्रमर (भौंरा) नीति: जिस प्रकार भौंरा फूल को बिना कोई चोट पहुँचाए उससे थोड़ा-थोड़ा रस लेता है, उसी प्रकार राजा को प्रजा पर बिना भारी बोझ डाले कर वसूलना चाहिए।
3. वत्स (बछड़ा) नीति: गाय के थन से दूध निकालते समय पहले बछड़े के लिए दूध छोड़ना चाहिए, उसके बाद ही दूध निकालना चाहिए। इसी तरह जनता को समृद्ध होने का अवसर देने के बाद ही टैक्स लेना चाहिए।

आधुनिक अर्थशास्त्र में एडम स्मिथ के 'कैनन्स ऑफ टैक्सैशन' (Canons of Taxation) और विशेषकर 'इष्टतम कराधान' (Optimum Taxation) तथा 'प्रगतिशील कर प्रणाली' (Progressive Taxation) के सिद्धांत पूरी तरह से भीष्म के इसी दर्शन पर आधारित हैं।

4.3 आपद्धर्म और संकट प्रबंधन (Crisis Management)

शांतिपर्व का एक विशिष्ट भाग 'आपद्धर्म' है। यह खंड इस बात की विवेचना करता है कि जब राज्य पर कोई अप्रत्याशित संकट (जैसे महामारी, अकाल, विदेशी आक्रमण या आंतरिक विद्रोह) आ जाए, तो राजा को अपने सामान्य नियमों को निलंबित कर किस प्रकार कठोर और व्यावहारिक निर्णय लेने चाहिए।

आधुनिक संदर्भ में, इसे हम 'आपातकालीन शक्तियां' (Emergency Powers) या 'संकट प्रबंधन' (Crisis Management) कहते हैं। भारतीय संविधान के भाग 18 (अनुच्छेद 352-360) में वर्णित आपातकाल के प्रावधान या वैश्विक स्तर पर कोविड-19 महामारी के दौरान सरकारों द्वारा लगाए गए कड़े लॉकडाउन और विशेष अध्यादेश 'आपद्धर्म' के सिद्धांतों के ही आधुनिक व्यावहारिक रूप हैं।

5. तुलनात्मक विश्लेषण: कौटिल्य, शुक्र और शांतिपर्व

तीनों ही स्रोत भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत आते हैं, परंतु उनके दृष्टिकोण में सूक्ष्म भिन्नताएं और पूरकताएं हैं। पाश्चात्य चिंतन में जहाँ यथार्थवाद (मैकियावेली) और आदर्शवाद (प्लेटो) दो विरोधी ध्रुव हैं, वहीं भारतीय चिंतन की यह विशेषता है कि कौटिल्य का यथार्थवाद भी अंततः धर्म की स्थापना के लिए है और शांतिपर्व का आदर्शवाद भी 'आपद्धर्म' के समय पूरी तरह व्यावहारिक हो जाता है। कौटिल्य का ध्यान विदेश नीति और कूटनीति पर केंद्रित है, शुक्रनीति का ध्यान आंतरिक प्रशासन व श्रम कल्याण पर है, तथा शांतिपर्व राजधर्म और व्यापक लोक-कल्याणकारी राज्य की बात करता है।

6. आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

वर्तमान 21वीं सदी की वैश्विक और राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्थाएं कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रही हैं। इन चुनौतियों के समाधान में भारतीय राजनीति दर्शन निम्नलिखित प्रकार से मार्गदर्शक बन सकता है:

6.1 सुशासन (Good Governance) और भ्रष्टाचार उन्मूलन

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में प्रशासनिक भ्रष्टाचार के 40 तरीकों का वर्णन किया है। इसके समाधान के लिए उन्होंने आंतरिक ऑडिट और गुप्तचर प्रणाली की बात कही। आज के समय में केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC), लोकपाल और सूचना का अधिकार (RTI) जैसे संस्थान कौटिल्य के इसी प्रशासनिक सुधार एजेंडे का हिस्सा दिखाई देते हैं।

6.2 वैश्विक शांति और 'वसुधैव कुटुंबकम्'

आज जब विभिन्न भू-राजनीतिक संघर्षों के कारण संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसी संस्थाएं आंशिक रूप से विफल साबित हो रही हैं, तब शांतिपर्व का 'राजधर्म' और कौटिल्य की 'संधि' नीति यह याद दिलाती है कि युद्ध अंतिम विकल्प होना चाहिए, पहला नहीं। भारतीय दर्शन 'विजिगीषु' (विजय की इच्छा रखने वाला) राजा को भी यह निर्देश देता है कि वह विजित राज्य की संस्कृति और जनता का सम्मान करे, जो आज के 'नियम-आधारित वैश्विक आदेश' (Rules-Based International Order) का समर्थन करता है।

6.3 सतत विकास (Sustainable Development)

शांतिपर्व की 'भ्रमर नीति' (फूल से रस लेने का सिद्धांत) को आधुनिक पर्यावरणीय राजनीति (Environmental Politics) पर भी लागू किया जा सकता है। मनुष्य को प्रकृति का दोहन उसी प्रकार करना चाहिए जिससे प्रकृति नष्ट न हो। यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का मूल मंत्र है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का राजनीति दर्शन किसी भी रूप में पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन से कमतर नहीं है, बल्कि कई मायनों में उससे अधिक समावेशी और शाश्वत है। कौटिल्य का यथार्थवाद राज्य को सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि प्रदान करता है, शुक्रनीति उसे एक कुशल प्रशासनिक और न्यायसंगत सांगठनिक ढांचा देती है, तथा शांतिपर्व उसे एक मानवीय, नैतिक और लोक-कल्याणकारी आत्मा प्रदान करता है। आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है।

संदर्भ ग्रंथ (References)

1. कौटिल्य. (2012). अर्थशास्त्र. (आर. पी. कांगले, अनुवादक). मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली.
2. महर्षि शुक्र. (2015). शुक्रनीतिसार. (पं. ब्रह्मशंकर मिश्र, व्याख्याकार). चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी.
3. वेदव्यास. (2008). महाभारत: शांतिपर्व (खंड 11 और 12). गीताप्रेस, गोरखपुर.
4. जायसवाल, के. पी. (1924). हिन्दू पॉलिटी: ए कॉन्स्टिट्यूशन हिस्ट्री ऑफ इंडिया इन हिन्दू टाइम्स. बटरवर्थ एंड कंपनी, कलकत्ता.
5. अल्तेकर, ए. एस. (1958). स्टेट एंड गवर्नमेंट इन एंशिएंट इंडिया. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
6. शर्मा, आर. एस. (1959). आस्पेक्ट्स ऑफ पोलिटिकल आइडियाज एंड इंस्टीट्यूशंस इन एंशिएंट इंडिया. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
7. मेहता, वी. आर. (1992). फाउंडेशंस ऑफ

COPYRIGHT:
© 2026 The Author(s). This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited. See http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/